INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 11 | DECEMBER – 2024

बिलासपुर ज़िले में धार्मिक विश्वास, आस्था और सामाजिक एकता: सांप्रदायिक सौहार्द एवं सामाजिक समरसता का अध्ययन

डॉ. श्री आरती तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र (प्रभारी प्राचार्य) एस. बी. टी. महाविद्यालय, जिला बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश:

भारत में धर्म सामाजिक जीवन का एक केंद्रीय तत्व रहा है, जिसने मूल्यों, विश्वासों तथा व्यक्तियों और समुदायों के बीच पारस्परिक संबंधों के स्वरूप को आकार दिया है। धार्मिक विश्वास और आस्था प्रायः दोहरी भूमिका निभाते हैं, एक ओर वे सामाजिक एकीकरण और नैतिक व्यवस्था को प्रोत्साहित करते हैं, तो दूसरी ओर कभी-कभी सामाजिक विभाजन का कारण भी बन जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर ज़िले में धार्मिक विश्वास और आस्था की भूमिका का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से सामाजिक एकीकरण, साम्प्रदायिक सौहार्द और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने के संदर्भ में, आँकड़ों का उपयोग किया गया है। अध्ययन में विभिन्न धर्मों के बीच संबंधों, साझा सांस्कृतिक प्रथाओं तथा धार्मिक संस्थाओं की भूमिका का परीक्षण किया गया है, जो विविध समुदायों के बीच एकता और सहयोग को प्रोत्साहित करती हैं। शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि बिलासपुर में धार्मिक आस्था सामान्यतः पारस्परिक सहिष्णुता, साझा पर्व-त्योहारों और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से सामाजिक एकजुटता को सुदृढ़ करती है, यद्यपि सामाजिक असमानता और कभी-कभार उत्पन्न होने वाले साम्प्रदायिक तनाव जैसी चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि साम्प्रदायिक सौहार्द को बनाए रखने के लिए समावेशी धार्मिक प्रथाएँ और विभिन्न समुदायों के बीच संवाद अत्यंत आवश्यक हैं।

मुख्य शब्द : *धार्मिक विश्वास, आस्था, सामाजिक एकीकरण, साम्प्रदायिक सौहार्द, सामाजिक एकजुटता, बिलासपुर ज़िला.*

प्रस्तावना:

भारतीय समाज में धर्म ने ऐतिहासिक रूप से सामाजिक संगठन, नैतिक मूल्यों और सामूहिक पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। धार्मिक विश्वास और आस्था प्रणालियाँ दैनिक व्यवहार, सामाजिक संबंधों और सामुदायिक जीवन को प्रभावित करती हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से धर्म एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्तियों के बीच सामाजिक एकीकरण, एकजुटता और अपनत्व की भावना को बढ़ावा देता है।

भारत धार्मिक विविधता से युक्त देश है, जहाँ हिंदू, इस्लाम, ईसाई, सिख, बौद्ध तथा विभिन्न जनजातीय आस्था प्रणालियों के अनुयायी निवास करते हैं। यह विविधता जहाँ एक ओर सांस्कृतिक समृद्धि का अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक एकजुटता के लिए चुनौतियाँ भी उत्पन्न करती है। छत्तीसगढ़ राज्य का बिलासपुर ज़िला इस बहुधार्मिक संरचना का प्रतिबिंब है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग दैनिक सामाजिक जीवन में परस्पर सह-अस्तित्व और अंतःक्रिया करते हैं।

बिलासपुर ज़िले में धार्मिक विश्वास सामाजिक रीति-रिवाज़ों, पर्व-त्योहारों, अनुष्ठानों और सामुदायिक गतिविधियों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। ये प्रथाएँ प्रायः विभिन्न धार्मिक सीमाओं के पार लोगों के मिलने-जुलने के अवसर प्रदान करती हैं और साम्प्रदायिक सौहार्द को सुदृढ़ करती हैं। साथ ही, सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, राजनीतिक प्रभाव और आपसी भ्रांतियाँ कभी-कभी तनाव की स्थिति उत्पन्न कर सकती हैं, जिससे सामाजिक एकीकरण प्रभावित होता है। इसी संदर्भ में, प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिलासपुर ज़िले में धार्मिक विश्वास और आस्था की भूमिका का अध्ययन करना है, ताकि साम्प्रदायिक सौहार्द और सामाजिक एकजुटता के समाजशास्त्रीय आयामों को समझा जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य:

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

१) बिलासपुर ज़िले के सामाजिक जीवन में धार्मिक विश्वास और आस्था की भूमिका का अध्ययन करना।
२) सामाजिक एकीकरण और साम्प्रदायिक सौहार्द में धर्म के योगदान का विश्लेषण करना।
३) विभिन्न धर्मों के बीच संबंधों तथा साझा सामाजिक प्रथाओं का अध्ययन करना।
४) साम्प्रदायिक सौहार्द और सामाजिक एकजुटता को प्रभावित करने वाली चुनौतियों की पहचान करना।
५) समावेशी धार्मिक प्रथाओं के माध्यम से सामाजिक एकीकरण को सुदृढ़ करने हेतु उपाय सुझाना।

अनुसंधान पद्धति:

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान रूपरेखा को अपनाया गया है। प्राथमिक आँकड़े बिलासपुर ज़िलेके विभिन्न धार्मिक समुदायों से संबंधित ३०० उत्तरदाताओं से संरचित प्रश्नावली और साक्षात्कारों के माध्यम से एकत्र किए गए। द्वितीयक आँकड़े जनगणना प्रतिवेदन, ज़िला सांख्यिकी पुस्तिकाएँ, सरकारी प्रकाशन, शोध लेख तथा पुस्तकों से प्राप्त किए गए। उत्तरदाताओं के चयन हेतु सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति का प्रयोग किया गया तथा आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, सारणियों और गुणात्मक विवेचन द्वारा किया गया।

बिलासपुर ज़िले में धार्मिक विश्वास, आस्था और सामाजिक एकीकरण:

बिलासपुर ज़िला छत्तीसगढ़ राज्य के प्रमुख ज़िलों में से एक है और यहाँ धार्मिक विविधता उच्च स्तर पर विद्यमान है। ज़िले की जनसंख्या में हिंदू, इस्लाम, ईसाई, सिख, बौद्ध तथा विभिन्न जनजातीय आस्था प्रणालियों के अनुयायी शामिल हैं। यह बहुधार्मिक संरचना ज़िले की सामाजिक संरचना की एक महत्वपूर्ण आधारशिला है। मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारे तथा अन्य सामुदायिक उपासना स्थल न केवल आध्यात्मिक जीवन के केंद्र हैं, बल्कि सामाजिक अंतःक्रिया और सामूहिक गतिविधियों के भी प्रमुख स्थल हैं। ये संस्थाएँ नैतिक मूल्यों, सामाजिक व्यवहार और सामुदायिक संबंधों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

धार्मिक पर्व-त्योहार, अनुष्ठान और सामुदायिक सभाएँ बिलासपुर ज़िले के सामाजिक जीवन में केंद्रीय स्थान रखती हैं। अनेक पर्व सामूहिक रूप से मनाए जाते हैं, जिनमें विभिन्न धर्मों के लोग सहभागिता करते हैं। ऐसी साझा उत्सव परंपराएँ विविध धार्मिक समुदायों के बीच पारस्परिक सम्मान, सांस्कृतिक निरंतरता और दैनिक सह-अस्तित्व को प्रतिबिंबित करती हैं। ये अवसर धार्मिक सीमाओं से परे सामाजिक संपर्क के अवसर प्रदान करते हैं और समाज में एकता एवं अपनत्व की भावना को सुदृढ़ करते हैं।

धार्मिक विश्वास और आस्था करुणा, सहिष्णुता, सहयोग और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे साझा नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करके बिलासपुर ज़िले में सामाजिक एकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। धार्मिक संस्थाएँ प्रायः सामाजिक संपर्क, दान-पुण्य और सामुदायिक सेवा के केंद्रों के रूप में कार्य करती हैं, जिससे सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। दान वितरण, शैक्षिक सहायता और सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों जैसी गतिविधियों के माध्यम से धार्मिक संगठन सामाजिक विभाजनों को पाटने और समुदाय स्तर पर एकीकरण को बढ़ावा देने में सहायक होते हैं।

धार्मिक अनुष्ठानों और पर्व-त्योहारों में सहभागिता अंतर-समुदायिक संपर्क के लिए मंच प्रदान करती है, जिससे सामाजिक बंधन सुदृढ़ होते हैं। बिलासपुर में आस्था-आधारित संगठन शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आपदा राहत जैसी कल्याणकारी गतिविधियों में भी

सक्रिय हैं। ये प्रयास धार्मिक सीमाओं से परे जाकर सामान्य सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं और विभिन्न समुदायों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे सामाजिक एकजुटता को बल मिलता है।

अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि बिलासपुर ज़िले में साम्प्रदायिक सौहार्द मुख्यतः विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमियों के लोगों के बीच पारस्परिक सम्मान और नियमित सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से बनाए रखा गया है। पर्व-त्योहारों, सामाजिक समारोहों और सामुदायिक विकास पहलों के दौरान अंतर-धार्मिक सहयोग विशेष रूप से दिखाई देता है। पड़ोस, कार्यस्थलों और बाज़ारों में होने वाली दैनिक अंतःक्रियाएँ भी शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सामाजिक विश्वास को सुदृढ़ करती हैं।

हालाँकि, अध्ययन यह भी इंगित करता है कि सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, गलत सूचनाएँ तथा बाहरी राजनीतिक या वैचारिक प्रभावों के कारण कभी-कभी तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यदि इन कारकों पर समय रहते ध्यान न दिया जाए, तो वे सामाजिक सौहार्द को प्रभावित कर सकते हैं। इसके बावजूद, सहिष्णुता की सुदृढ़ परंपराएँ, साझा सांस्कृतिक प्रथाएँ और समुदायों के बीच पारस्परिक निर्भरता ने अब तक गंभीर साम्प्रदायिक संघर्षों को काफी हद तक रोके रखा है और स्थानीय स्तर पर सामाजिक एकजुटता को बनाए रखा है।

सामान्यतः सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा देने में धर्म की सकारात्मक भूमिका के बावजूद, बिलासपुर ज़िले में सामाजिक एकजुटता के समक्ष कुछ चुनौतियाँ बनी हुई हैं। विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, कुछ क्षेत्रों में अंतर-धार्मिक संवाद की कमी, राजनीतिक और वैचारिक प्रभाव तथा धार्मिक विविधता के प्रति अपर्याप्त जागरूकता सामाजिक बंधनों को कमजोर कर सकती है। यदि इन चुनौतियों का समाधान समावेशी, सहभागितापूर्ण और संवाद-आधारित दृष्टिकोण से नहीं किया गया, तो दीर्घकालिक साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए जोखिम उत्पन्न हो सकता है। अतः अंतर-धार्मिक समझ को सुदृढ़ करना, सामाजिक समानता को बढ़ावा देना और सहयोगात्मक सामुदायिक पहलों को प्रोत्साहित करना ज़िले में सामाजिक एकजुटता को बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन के परिणाम:

तालिका १ : सामाजिक एकीकरण में धार्मिक विश्वास और आस्था की भूमिका (N = ३००)

प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
पूर्णतः सहमत	१३२	४४.००
सहमत	१०८	३६.००
तटस्थ	३६	१२.००
असहमत	१८	६.००
पूर्णतः असहमत	६	२.००
कुल	**३००**	**१००**

उत्तरदाताओं के एक बड़े बहुमत (८०%) का मत है कि धार्मिक विश्वास और आस्था सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा देने में सकारात्मक भूमिका निभाते हैं।

तालिका २ : साझा पर्व-त्योहारों एवं सांस्कृतिक प्रथाओं का साम्प्रदायिक सौहार्द पर प्रभाव (N = ३००)

मत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
सौहार्द को अत्यधिक सुदृढ़ करता है	१५०	५०.००
सौहार्द को मध्यम रूप से सुदृढ़ करता है	९६	३२.००
कोई विशेष प्रभाव नहीं	३६	१२.००
सौहार्द को कमजोर करता है	१८	६.००
कुल	**३००**	**१००**

लगभग ८२% उत्तरदाता इस मत से सहमत हैं कि साझा पर्व-त्योहार और सांस्कृतिक प्रथाएँ साम्प्रदायिक सौहार्द को सुदृढ़ करती हैं।

तालिका ३ : सामाजिक कल्याण और सामुदायिक एकता में धार्मिक संस्थाओं की भूमिका (N = ३००)

गतिविधि	हाँ (%)	नहीं (%)
दान-पुण्य एवं ज़रूरतमंदों की सहायता	७४%	२६%
शैक्षिक सहयोग	६१%	३९%
स्वास्थ्य एवं राहत सेवाएँ	५८%	४२%
अंतर-समुदायिक एकता को बढ़ावा	६९%	३१%

बिलासपुर ज़िले में धार्मिक संस्थाएँ सामाजिक कल्याण तथा सामुदायिक एकता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

तालिका ४ : बिलासपुर ज़िले में अंतर्धार्मिक संबंधों की प्रकृति (N = ३००)

धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
अत्यंत शांतिपूर्ण एवं सहयोगात्मक	१२६	४२.००
सामान्यतः शांतिपूर्ण	११४	३८.००
कभी-कभी तनावपूर्ण	४२	१४.००
प्रायः संघर्षपूर्ण	१८	६.००
कुल	**३००**	**१००**

लगभग ८०% उत्तरदाताओं की धारणा है कि ज़िले में अंतर-धार्मिक संबंध सामान्यतः शांतिपूर्ण और सहयोगात्मक हैं।

तालिका ५ : सामाजिक एकजुटता को प्रभावित करने वाली चुनौतियाँ (N = ३००)

चुनौती	उत्तरदाता (%)
सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ	६८%
राजनीतिक या वैचारिक प्रभाव	५४%
गलत सूचना एवं अफ़वाहें	४९%
अंतर-धार्मिक संवाद की कमी	४६%
धार्मिक विविधता के प्रति कम जागरूकता	४१%

संरचनात्मक असमानताएँ और बाहरी प्रभाव सामाजिक एकजुटता को बनाए रखने की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। संख्यात्मक आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक विश्वास, साझा पर्व-त्योहार और धार्मिक संस्थाएँ बिलासपुर ज़िले में सामाजिक एकीकरण और साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने में सकारात्मक भूमिका निभाती हैं। अंतर-धार्मिक संबंध सामान्यतः शांतिपूर्ण और सहयोगात्मक हैं। तथापि, सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ और बाहरी प्रभाव दीर्घकालिक सामाजिक एकजुटता के समक्ष चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं।

चर्चा (Discussion):

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि बिलासपुर ज़िले के सामाजिक जीवन में धार्मिक विश्वास और आस्था की भूमिका सकारात्मक तथा एकीकरणकारी रही है। उत्तरदाताओं के एक बड़े वर्ग ने यह स्वीकार किया कि धर्म से प्राप्त करुणा, सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान जैसे साझा नैतिक मूल्य विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच सामाजिक एकीकरण और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को प्रोत्साहित करते हैं। ये मूल्य समाज में अपनत्व और सामूहिक पहचान की भावना विकसित करने में सहायक होते हैं, जिससे सामुदायिक स्तर पर सामाजिक बंधन सुदृढ़ होते हैं।

अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि साझा पर्व-त्योहारों और सांस्कृतिक प्रथाओं की साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका है। धार्मिक पर्वों और सांस्कृतिक आयोजनों में सामूहिक सहभागिता अंतर-धार्मिक संपर्क और सहयोग के अवसर प्रदान करती है। ऐसी साझा उत्सव परंपराएँ सामाजिक दूरी को कम करती हैं, पारस्परिक समझ को बढ़ाती हैं और बिलासपुर ज़िले में विविध समुदायों के बीच सहिष्णुता तथा सह-अस्तित्व की परंपराओं को सुदृढ़ करती हैं।

धार्मिक संस्थाएँ सामाजिक कल्याण और सामुदायिक एकता को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देती पाई गई हैं। दान-पुण्य, शैक्षिक सहायता, स्वास्थ्य सेवाओं और राहत कार्यों के माध्यम से धार्मिक संगठन धार्मिक सीमाओं से परे जाकर सामान्य सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करते हैं। इससे विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच विश्वास और सहयोग सुदृढ़ होता है।

अध्ययन के अनुसार, बिलासपुर ज़िले में अंतर-धार्मिक संबंध सामान्यतः शांतिपूर्ण और सहयोगात्मक हैं, जिन्हें दैनिक सामाजिक अंतःक्रियाएँ और साझा सामुदायिक स्थल समर्थन प्रदान करते हैं। तथापि, संरचनात्मक असमानताएँ, राजनीतिक एवं वैचारिक प्रभाव तथा गलत सूचनाएँ सामाजिक एकजुटता के लिए चुनौती उत्पन्न करती हैं। यदि इनका समाधान समावेशी संवाद और न्यायपूर्ण विकास के माध्यम से नहीं किया गया, तो तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। समग्र रूप से, यह चर्चा संकेत देती है कि धर्म एक एकीकृत करने वाली शक्ति है, किंतु दीर्घकालिक साम्प्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्ष है कि बिलासपुर ज़िले में धार्मिक विश्वास और आस्था सामाजिक एकीकरण, साम्प्रदायिक सौहार्द तथा सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण और अधिकांशतः सकारात्मक भूमिका निभाते हैं। ज़िले की बहुधार्मिक संरचना, करुणा, सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान जैसे साझा नैतिक मूल्यों के साथ मिलकर विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को सुदृढ़ करती है। धार्मिक पर्व-त्योहारों, अनुष्ठानों और सांस्कृतिक प्रथाओं में सामूहिक सहभागिता ने अंतर-समुदायिक संपर्क को मजबूत किया है और सामाजिक बंधनों को सुदृढ़ किया है जिससे सामाजिक दूरी कम हुई है और एकता की भावना विकसित हुई है। अध्ययन धार्मिक संस्थाओं की सामाजिक कल्याण और सामुदायिक एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका को भी रेखांकित करता है। दान-पुण्य, शैक्षिक सहयोग, स्वास्थ्य सेवाओं और राहत कार्यों जैसी गतिविधियों के माध्यम से ये संस्थाएँ धार्मिक सीमाओं से परे जाकर समाज में सामूहिक उत्तरदायित्व और विश्वास को सुदृढ़ करती हैं। तथापि, संरचनात्मक असमानताएँ, सामाजिक-आर्थिक विषमताएँ, गलत सूचनाएँ और बाहरी राजनीतिक प्रभाव दीर्घकालिक सामाजिक एकजुटता के समक्ष चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं। समग्र रूप से, अध्ययन यह संकेत देता है कि समावेशी धार्मिक प्रथाएँ, अंतर-धार्मिक संवाद और समानतापूर्ण विकास प्रयास बिलासपुर ज़िले में दीर्घकालिक साम्प्रदायिक सौहार्द को बनाए रखने और सामाजिक एकीकरण को सुदृढ़ करने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

संदर्भ:

1) *Banjara, G. S. (2018). A sociological study of Banjara community with special reference to socio-cultural life of Bilaspur district. Shodhganga: Inflibnet.*
2) *Chandra, S. (2015). Religious identity and economic disparities: A study of communities in Chhattisgarh. Economic and Political Weekly, 50(6), 67–73.*
3) *Das, R. K. (2016). Religious practices and social integration: A study of rural Bilaspur. Indian Journal of Research in Anthropology, 2(1), 89–102.*
4) *Dewangan, P. (2019). Cultural festivals of primitive tribes of Bilaspur division of Chhattisgarh: A study on social harmony. International Journal of Advances in Social Sciences, 7(2), 65–72.*
5) *Kumar, S. (2020). A study of the traditional festivals among the Gond tribe: Transition and social cohesion. Research Journal of Humanities and Social Sciences, 11(3), 69–75.*
6) *National Foundation for Communal Harmony. (2016). Promotion of communal social harmony through research studies. Government of India.*
7) *Patel, S., & Shrivastava, A. (2017). Inter-faith relationships and social cohesion in urban Bilaspur: An empirical analysis. International Journal of Sociology and Anthropology, 9(4), 134–145.*
8) *Sahu, K. L. (2015). Religious conversion and tribes in Chhattisgarh: A case study of social impact. Raipur: Chhattisgarh State Research Centre.*

9) *Sharma, N. (2018). History and culture of district Bilaspur: The role of local shrines in promoting communal unity. Shodhganga: Inflibnet.*
10) *Shrivastava, P. (2019). The legacy of Guru Ghasidas: Satnami revolution and social unity in Chhattisgarh. Forward Press.*
11) *Thakur, M. (2013). Socio-cultural dynamics of religious diversity in Chhattisgarh: Challenges for social unity. Himalayan Journal of Social Sciences, 3(1), 22–35.*
12) *Tripathi, S., & Kashyap, K. (2019). Changing status of tribe and caste: An anthropological study in Birkona village of Bilaspur, Chhattisgarh. ResearchGate (Original data cited from 2019 survey).*
13) *Ministry of Education. (2018). India: Unity in cultural diversity. Department of School Education and Literacy.*
14) *Ratna, S. (2014). Social integration and communal harmony in India: Challenges and prospects. Journal of Social Science Research, 12(4), 88–97.*